मेला

मदन, मेले चल ।
देर मत कर ।
कमला, मेले चल ।
देर मत कर ।

मालावाले, वह माला दे ।
लाल माला दे ।
कमला, लाल माला ले ।

अरे वह बाजेवाला ।
बाजेवाले बाजेवाले, बाजा दे ।
वह बाजा दे ।
ले बाजा ले ।
ले मदन, बाजा बजा ।

Taken from Bal Bharti, Hindi text book for Class 1 prescribed by NCERT of India Akhlesh.com

मेले से घर

कमला, मदन, घर चलो ।
अब घर चलो ।
देर मत करो ।
बस से घर चलो ।

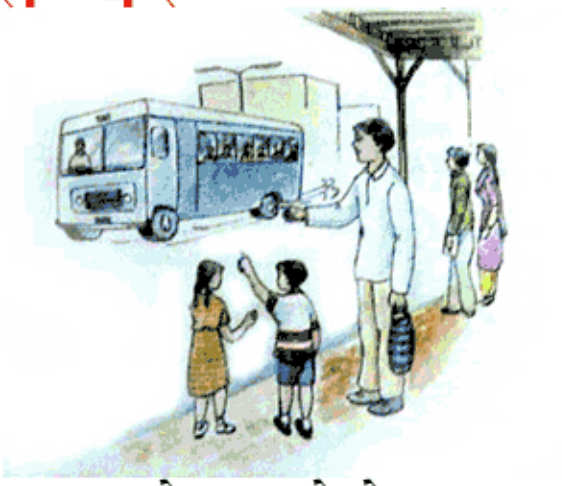

बसवाले, बस रोको ।
चलो, घर चलो ।
देखो, मेरा बाजा देखो
देखो, देखो माला देखो

मदन, अब सो जा ।
कमला, माला रख दे ।
अब सो जा ।
कल खेलना ।

Taken from Bal Bharti, Hindi text book for Class 1 prescribed by NCERT of India Akhlesh.com

आओ खाना खाओ

कमला आओ।
मदन आओ।
मीरा को साथ लाओ
आओ खाना खाओ।
सब मिलकर खाना खाओ।
आओ मीरा आओ।
आओ खाना खाओ।

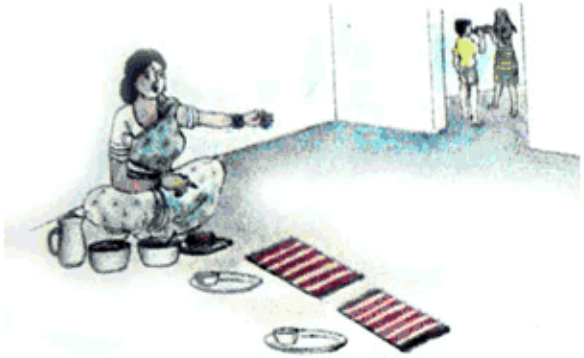

माता जी दाल चावल दो।
लो मीरा दाल चावल लो।
साग लो चटनी लो।
मदन रोटी लो रायता लो।
खाना चवा चवा कर खाओ।
माता जी पानी दो।
लो कमला पानी लो।
यह लो पानी का गिलास।
अब खीर खाओ।

Taken from Bal Bharti, Hindi text book for Class 1 prescribed by NCERT of India Akhlesh.com

कमला की गुड़िया

एक दिन कमला ने अपनी सहेली मीरा से कहा - मेरी गुड़िया बड़ी हो गई । अब इसकी शादी करनी चाहिए ।

कमला ने लाल कपड़ा लिया । मदन ने उसे साबुन से धोया । कमला सुईधागा लाई । उसने गुड़िया के लिए कुरता बनाया । मीरा ने गुड़िया के लिए सलवार बनाई ।

मीरा घर से ऊनी कपड़ा लाई । उसने ऊनी कपड़े से गुड़िया के लिए शाल बनाई ।

कमला ने गुड़िया को सलवार पहनाई । उसने गुड़िया को कुरता पहनाया । उसे अपनी लाल माला पहनाई । मीरा ने गुड़िया के ऊपर शाल लपेटी ।

मदन बोला - वाह ! अब गुड़िया दुलहन बन गई । मीरा बोली यह तो सचमुच दुलहन बन गई । कमला बहुत खुश हुई ।

Taken from Bal Bharti, Hindi text book for Class 1 prescribed by NCERT of India

Akhlesh.com

झूला झूलो

सावन का महीना था। बादल आ रहे थे।
सब झूला झूलना चाहते थे ।
मदन के घर के पास नीम का एक पेड़ था।
मदन के पिता जी ने पेड़ पर झूला डाल दिया ।

कमला सलमा के घर गई।
उसे बुला लाई।
वह मीरा को भी बुला लाई।
सलमा का भाई रहीम भी झूला झूलने आया
कमला के साथ मीरा भी झूली ।
तब मदन के साथ रहीम झूला ।
कमला सलमा के साथ झूले पर बैठी ।
मीरा गाना गाने लगी ।
सलमा भी उसके साथ गाने लगी
सभी ने मिलकर गाना गाया ।

झूला झूलो, झूला झूलो, मिल कर झूला झूलो रे ।
सावन आया, झूला झूलो, मिल कर झूला झूलो रे ।

Taken from Bal Bharti, Hindi text book for Class 1 prescribed by NCERT of India

Akhlesh.com

प्यासा कौआ

एक बार एक कौआ बहुत प्यासा था। उसको कही पानी नही मिल रहा था। बहुत ढूंढने पर उसको एक घड़ा दिखाई दिखाई दिया। घड़े में बहुत थोड़ा सा पानी था। कौए की चोंच पानी तक नही पहुँच पा रही थी।

वह बड़े ध्यान से सोचने लगा और उसे एक उपाय सूझा। पास ही पत्थर के कुछ टुकड़े पड़े थे। कौए ने एक एक पत्थर उठाया और घड़े में डालता गया । धीरे धीरे पानी ऊपर आने लगा । कौआ लगातार पत्थर डालता गया। जल्दी ही पानी इतना ऊपर आ गया कि कौए की चोंच वहाँ तक आराम से पहुँच गई।

तब कौए ने पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई।

Akhlesh.com

हवा और सूरज

एक बार हवा और सूरज में बहस हो गई कि उनमे से कौन अधिक ताकतवर है। उन्होनें देखा कि एक यात्री कोट पहन कर जा रहा है । उन्होनें निश्चय किया कि जो भी उस यात्री का कोट पहले उतरवा देगा वही अधिक ताकतवर होगा ।

हवा ने शुरूआत की । हवा जोर से बहने लगी । पर जितनी तेज हवा बहती यात्री उतना ही कसकर अपना कोट पकड लेता ।

अब सूरज की बारी आई । पहले वह धीरे से चमका ताकि हवा से ठंडा हो चुका यात्री अपनी ठंडक दूर कर सके । फिर वह धीरे धीरे अपनी रोशनी तेज करता गया और गर्म होता गया । तब गर्मी के कारण यात्री को अपना कोट उतारना पड़ा । इस तरह जो काम हवा ताकत से नहीं करवा पाई वह सूरज ने आराम से करवा लिया । इस तरह सूरज हवा से जीत गया ।

Akhlesh.com

खरगोश और कछुआ

एक जंगल में एक खरगोश रहता था । वह सारे जंगल में खूब तेज दौड़ता फिरता था । एक बार उसने कछुए से कहा "तुम कितने धीरे चलते हो मैं निश्चय ही तुम्हें दौड़ में हरा सकता हू"

कछुआ बोला "निश्चित ही मैं धीरे चल पाता हूँ पर तुमसे दौड़ लगाने के लिए तैयार हूँ"

दोनो ने दौड़ शुरू की । खरगोश कुछ अधिक ही उत्साहित था । उसे अभिमान था कि वह हवा की तरह तेज दौड़ सकता है और वह जरूर जीतेगा । आधे रास्ते पहुँच कर उसने देखा कि कछुआ बहुत पीछे रह गया है । उसने सोचा "अभी तो मेरे पास बहुत समय है क्यों न ठंडी हवा में एक झपकी ले लूँ"। यह सोच कर वह सो गया ।

जीत को ध्यान में रख कर कछुआ एक पल के लिए भी नहीं रूका और लगातार चलता रहा । धीरे-धीरे चलते हुए कछुआ सोते हुए खरगोश को पार कर अंत में विजय स्थल पर पहले पहुँच कर दौड़ जीत गया ।

Akhlesh.com

दो बिल्लियों का झगड़ा

एक बार दो बिल्लियाँ कहीं जा रही थीं । उन्हे एक रोटी पड़ी मिली । उनमें झगड़ा होने लगा । दोनो कहने लगीं "यह रोटी पहले मैने देखी है इसे मैं खाउंगी" । उनका झगड़ा सुनकर एक बन्दर वहाँ आया और उसने बिल्लियों से कहा "तुम दोनो झगड़ा मत करो मैं इस रोटी को दो बराबर हिस्सों में बाँट देता हूँ तुम दोनो एक एक हिस्सा खा लेना" ।

बन्दर ने उस रोटी को दो हिस्सों में तोड़ दिया। लेकिन रोटी के दोनो हिस्से बराबर नहीं थे । "ओह यह तो एक हिस्सा छोटा हो गया" बन्दर ने बिल्लियों से कहा "चिन्ता मत करो मैं अभी इन टुकड़ों को बराबर कर देता हूँ" । बन्दर ने बड़े हिस्से में से एक गस्सा खा लिया । लेकिन अब वह हिस्सा छोटा हो गया । फिर बन्दर ने दूसरे हिस्से में से रोटी का एक गस्सा खा लिया । लेकिन अब वह हिस्सा ज्यादा छोटा हो गया ।

ऐसे करते करते बंदर सारी रोटी खा गया । तब बिल्लियों को समझ में आया कि उन्हें मिल बाँट कर रहना चाहिए और झगड़ा नही करना चाहिए ।

Akhlesh.com

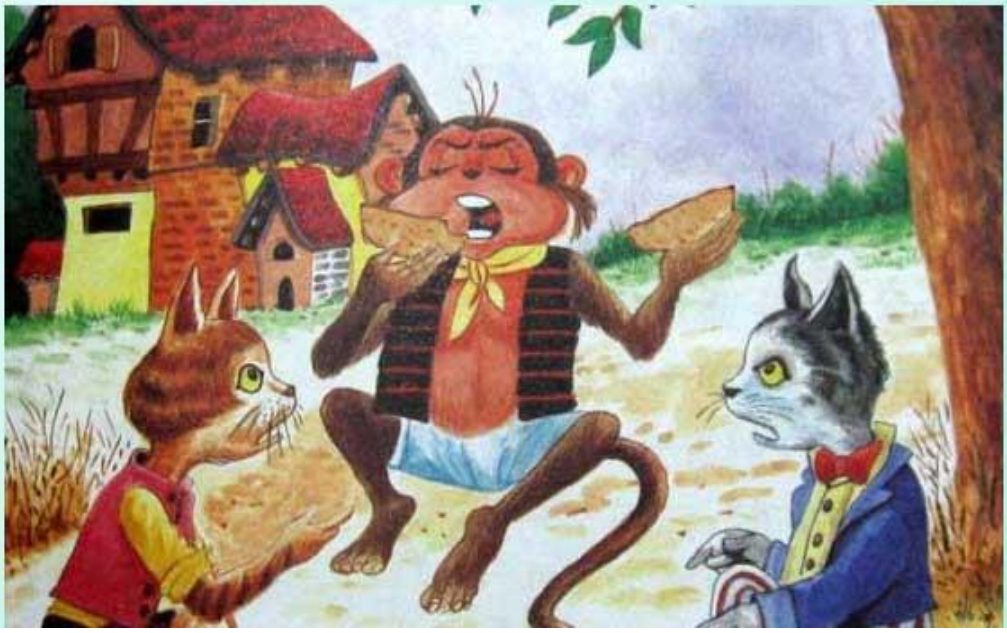

दुष्ट शेर और बुद्धिमान खरगोश

एक जंगल में एक बलवान किन्तु निर्दयी शेर रहता था। उसके रास्ते में जो भी आता था वह उसको मार देता था। चाहे शेर को भूख न लगी हो तब भी वह सबको मार देता था।

एक दिन सभी जानवर उसके पास गए और उससे एक विनती की। वे बोले कि रोज़ एक जानवर उसके पास भोजन के लिए आएगा और बदले मे वह किसी और जानवर को नही मारेगा। शेर राज़ी हो गया।

एक दिन खरगोश की बारी आई । खरगोश बहुत बुद्धिमान था । उसने शेर के पास पहुँचने मे बहुत देर लगाई। जब शेर ने पूछा तो खरगोश बोला कि उसे रास्ते में एक दूसरे शेर ने रोक लिया था जो अपने को जंगल का राजा बताता है।

शेर को बहुत गुस्सा आया। उसने कहा कि जंगल का राजा तो मैं हूँ।कहाँ है वह दूसरा शेर मुझे उसके पास ले चलो। खरगोश उसे एक कुएँ के पास ले गया और पानी मे उसकी परछाई दिखाई। शेर ने सोचा यही वह दूसरा शेर है। शेर अपने दुश्मन को मारने कुएँ में कूद गया और डूब कर मर गया।

जंगल के सभी जानवर बहुत खुश हुए और उन्होने खरगोश की खूब सराहना की।

Akhlesh.com

कौआ और हंस

कौए को हंस के सफेद होने से बडे ईर्ष्या थी। 'देखो यह कितना सुंदर है बिल्कुल साफ और सफेद! शायद इसलिये कि वह तालाब में हमेशा नहाता रहता है'।

'काश मैं भी आपने काले रंग को धो पाता'। और यह सेचकर कौआ तालाब की और उड़ चला। कौआ पानी मैं बहुत देर तक नहाता रहा पर उसने अपने रंग मैं कौई परिर्वतन नहीं पाया। काऐ का रंग काला ही रहा और वह असंतुष्ट बना रहा।

Akhlesh.com